कल्पना की उड़ान ने खिंचवाई रेखाएं

-रतन चंद 'रत्नेश'

इस पहली जून को 78 वर्ष के हो चुके डॉ.रमेश कुंतल मेघ इस उम्र में भी युवाओं जैसे जोश और उत्साह में दिखते हैं। एक मूर्धन्य आलोचक, चिंतक और कवि के रूप में हिन्दी साहित्य में अपनी विशेष पहचान बना चुके मेघ जी कभी एक कुशल चित्रकार भी रहे हैं, यह शायद बहुत ही कम लोगों को पता होगा। अनूप सेठी जी ने जब यह आग्रह किया कि मैं उनके उन पचास वर्ष पूर्व बनाए रेखाचित्रों को स्कैन या कैमरे में कैद कर उसे सीडी रूप में भिजवा दूं, तब मुझे उनके मनीमाजरा स्थित निवास में जाकर उन चित्रों को देखने का अवसर मिला। चंडीगढ़ के एक उभरते हुए छायाकार दीपक अरोड़ा से हमेशा की तरह इस कार्य में भी भरपूर सहयोग मिला और एक शाम निर्धारित समय 6 बजे से पहले ही हम मेघ जी के घर जा पहंचे। वे उस समय अपने उन रेखाचित्रों को ही हमारे लिए सहेज रहे थे। अनूप सेठी से उनकी इस बाबत पहले ही बात हो चुकी थी और उन्हें यह लगा था कि 'हिमाचल मित्र' के लिए उन्हें विशेष रूप से मंडी के मंदिरों के रेखाचित्र चाहिए होंगे। बहरहाल अनूप जी से फोन पर यह जानकारी भी उसी समय ले ली गई।

सबसे पहले उन्होंने स्वप्न और चेतना शृंखला के कुछ रेखाचित्र हमारे समक्ष रखे जिन्हें दीपक ने मकान के बाहर एक स्टूल पर रखकर कैमरे से खींचना आरम्भ किया। ठीक उसी समय मेघ जी की छोटी पुत्री अभिषेका भी वहाँ आ गईं, जिन्होंने रेखाचित्र की पृष्ठभूमि में रखने के लिए गहरे हरे रंग का कागज भी उपलब्ध करा दिया। इन रेखाचित्रों को एक-एक कर दिखाते हुए मेघजी इतने आत्म-मुग्ध हो गए कि लगा जैसे एक बच्चा अपनी बहुमूल्य वस्तुओं को एक-एक कर दिखा रहा है; साथ ही आह्लादित होता जा रहा है। मेघ जी अपनी इस कला के संदर्भ में इस क़दर आत्म-प्रशंसात्मक ढंग से बता रहे थे कि उनके पुत्री को कहना पड़ा, ''पापा, यू आर प्रेज़िंग योरसेल्फ टू मच।'' इस पर हम भी मेघ जी की इस बाल-सुलभ अदा पर मुस्कुराए बिना नहीं रह सके। बहरहाल, मेघ जी ने यह अस्वीकार नहीं किया कि अगर वे लेखक नहीं होते तो आज निस्संदेह एक जाने-माने पेंटर या कलाकार होते। वास्तव में वे हो भी जाते अगर उनकी आँखें खराब न होने लगतीं। युवावस्था में ही एक नेत्र-चिकित्सक ने उन्हें सलाह दी थी कि आप रेखांकन का यह सूक्ष्म कार्य न करें अन्यथा आँखें नष्ट हो सकती हैं। उन्होंने लगभग 19-20 वर्ष की उम्र में कई चित्र बनाए और उन दिनों उन पर अपना नाम भी नहीं लिखते थे। हाँ, बाद में चलकर कुछ चित्रों में उनकी कविता के भाव उजागर हुए हैं। मेघ जी के कई रेखांकन नष्ट हो गए हैं और जो भी बने हैं सब के सब पेंसिल से। इनमें से कुछ को वे सहेज पाने में सफल रहे हैं। वे कहते हैं, ''पहले आर्ट्स छूटा तो फिर आर्ट्स पर लिखने लगा। यह भी छूटा तो क्रिटिसिज़्म में आ गया। यह सब कैसे कर गया, आज मुझे स्वयं आश्चर्य होता है। कल्पना की उड़ान ने न जाने कैसी-कैसी रेखाएँ खिंचवाईं।''

उन्होंने मुझे एक चित्र दिखाते हुए कहा, ''देखो, ये बारीक लाईन खींचना कितना मुश्किल और श्रमसाध्य कार्य है। .... वैसे आज भी कोशिश करूं तो तुम्हारी फोटो हूबहू बना सकता हूं।''

हिमाचल प्रदेश की मंडी के मंदिरों और देवी-देवताओं की एक शृंखला दिखाते हुए वे बोले, ''उन दिनों रबर नहीं हुआ करती थी, सो जो लाइन खिंच गई, समझो वह खींच दी गई। चित्रकारी करते समय मुझे पहले ध्यानस्थ होना पड़ता था। जब तक प्रतिमा की आत्मा का साक्षात्कार नहीं होगा, एक अच्छी चित्रकारी नहीं हो सकती।''

मेघ जी को इस बात का भी खेद है कि हमारी अमूल्य कला धरोहर धीरे-धीरे नष्ट होती जा रही है। कुछ विदेशी ले गए और जो बचे उनकी 'ऑरिजनिलिटी' समाप्त हो गई या फिर कर दी गई है। एक अन्य चित्रांकन दिखाते हुए वे बोले, ''लाइन की ताकत देखिए जैसे नकली मोर अभी बोल पड़ेगा। .... हमारा फोकआर्ट इतना जीवंत था कि वुडवर्क की डिजायनिंग कमाल की होती थी। हिमाचल प्रदेश कला में समृद्ध है। इसे बचाकर रखने की जरूरत है।''

इसी तरह उन्होंने विदिशा संग्रहालय से भी कुछ कलाकृतियों का अंकन किया है। एक शिल्प की प्रशंसा करते हुए वे कहते हैं कि हनुमान जी को सर्वत्र आप पर्वत उठाए एक ही बोगस मुद्रा में देखेंगे जबकि यहाँ हनुमान जी नृत्य करते हुए अद्भुत रूप में दिखाए गए हैं। बिदिशा की ही यक्ष-यक्षिणी की मूर्ति के अन्यतम होने का वर्णन करते हुए उन्होंने बताया कि इनके लिए संग्रहालय में अलग से कमरे बनाए गए थे जहाँ ये बारह फीट की मूर्तियाँ स्थापित की गईं। इसी क्रम में दीपक अरोड़ा का फोटो सेशन भी चलता रहा। डॉ.रमेश कुंतल मेघ में अभी भी कुछ नया करने का जज्बा दिखाई देता है। कहने लगे, ''लाइफ में कुछ काम पूरे करना चाहता हूं, हो जाँय तो हो जाँय।''

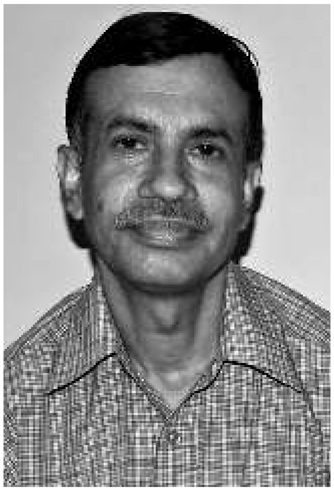

म.नं. 1859, सेक्टर - 7 सी चंडीगढ़ - 160019